शिक्षक-शिक्षा संवाद

7 मार्च 2021

'21वीं सदी में शिक्षक शिक्षा का कायाकल्प

राष्ट्रीय संगाष्ठी के समापन सत्र को संबोधित करते हुए श्री होसबाले एवं उपस्थित प्रबुद्धजन।

'भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने के लिए आगे आएं'

■ शिक्षक शिक्षा पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री होसबाले का शिक्षा जगत से आहवान

भोपाल। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने आज यहां '21वीं सदी में शिक्षक शिक्षा का कायाकल्प' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में शिक्षा जगत से जुड़े सभी लोगों से आह्वान किया कि वे भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने के लिए आगे आयें। आज हमारे पास नीति है, परिवेश भी है। यदि हम संकल्प लेंगे तो आने वाले 15–20 वर्षों में यह संभव है। समाज को साथ लेने के लिए सकारात्मक आन्दोलन करें।

श्री होसबाले संगोष्ठी के मुख्य अतिथि के रूप में समापन समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान, मध्यप्रदेश शासन और राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस संगोष्ठी में समापन सत्र में प्रदेश के स्कूल शिक्षा राज्य मंत्री श्री इंदर सिंह परमार, एन.सी.टी.ई. के अध्यक्ष श्री विनीत जोशी, विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष श्री कैलाश चंद्र शर्मा व चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के कुलपति श्री नरेन्द्र कुमार तनेजा, उपाध्यक्ष मंजूश्री सरदेशपांडे, प्रदेश संयोजक डॉ. शशिरंजन अकेला भी मंच पर उपस्थित रहे।

इस अवसर पर श्री होसबाले ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है और इसमें लाखों लोगों ने योगदान दिया है। विश्व भर के लोकतांत्रिक देशों में कहीं भी ऐसी नीति नहीं है जिसको बनाने में इतनी बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी हो। यह हमारे संविधान की तरह ही है और इसे जनता ने स्वयं के लिए बनाया है। पूर्व में भी शिक्षा जगत को लेकर अच्छी नीतियां बनाई गईं लेकिन उनका क्रियान्वयन ठीक तरीके से नहीं हो पाया। आज समाज में यह संकल्प दिखाई देता है कि हम भारत को विश्व के अन्य देशों के मुकाबले आगे रखें। उन्होंने कहा कि विद्या वैश्विक है यह सार्वदेशिक है। शिक्षक अपने विद्यार्थी को मात्र एक चौथाई ही सिखाता है लेकिन वह बाकी तीन हिस्सों के लिए भी उसके मन में भावना तैयार करता है, वातावरण का निर्माण करता है। विद्यार्थी दूसरा चौथाई भाग अपनी बुद्धि से, तीसरा चौथाई भाग अपने सहपाठियों से सीखता है और अंतिम चौथा भाग वह कालक्रम में सीखता है। उन्होंने कहा कि समाज, सरकार और शिक्षण संस्थाओं की जिम्मेदारी है कि शिक्षक को पर्याप्त सम्मान मिले। आज कहा जाता है कि शिक्षकीय दायित्व प्रोफेशनल है। शिक्षण व्यवसाय, नौकरी नहीं है। यह तपस्या, साधना और मिशन है। यदि शिक्षक को समाज में अलग से महत्व चाहिए तो उसे राष्ट्रधर्म के अनुसार जीना होगा। हमारे समाज में ऐसे हजारों उदाहरण हैं जिसमें ऐसे शिक्षकों को विद्यार्थी अंतिम सांस तक याद रखते हैं। उन्होंने शिक्षकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे शिक्षण संस्थाओं में गुणवत्ता बढ़ाने के लिए प्रयास करें। यह वर्तमान पीढ़ी का दायित्व है कि भारत की शिक्षण प्रणाली एक आदर्श मॉडल के रूप में स्थापित हो और विश्व के अन्य देश इसकी चर्चा करें।

विद्या भारती शिक्षक शिक्षा के मानक बनाने के लिए सुझाव दें– श्री जोशी

एन.सी.टी.ई. के चेयरमैन श्री विनीत जोशी ने कहा कि उनकी संस्था अब आगे शिक्षण व्यवस्था के मानक को तैयार करने का कार्य करेगी। उन्होंने विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान से इस बारे में सुझाव देने का आग्रह भी किया। उन्होंने बताया कि चार वर्षीय बीएड पाठ्यक्रम तैयार हो चुका है और इसे पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लागू किया जाएगा। साथ ही यूजीसी ने 'एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट' बनाने के लिए रेगुलेशन बना लिया है और इसे भारत सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के साथ मिलकर एक प्लेटफार्म पर लांच करने की तैयारी चल रही है। केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के लिए संयुक्त प्रवेश परीक्षा आयोजित किये जाने का प्रस्ताव भी विच. राधीन है, जिसे आने वाले सत्र से शुरू किये जाने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि दो दिवसीय संगोष्ठी की अनुशंसाओं का अध्ययन कराकर उसे लागू करेंगे।

शिक्षा पर भारत की अवधारणा विस्तृत व उच्च है– प्रो. तनेजा

दो दिवसीय संगोष्ठी की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के कुल. पति प्रो. नरेन्द्र कुमार तनेजा ने कहा कि शिक्षा को लेकर पश्चिम की अवधारणा एकांगी है। भारत की अवधारणा विस्तृत एवं उच्च है। शिक्षा का उद्देश्य सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को स्थापित करना है। आज शिक्षा को पैकेज के साथ जोड़कर हम देखते हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति बहुविषयक शिक्षक शिक्षा को व्यावहारिक रूप प्रदान करेगी। इसके लिए नवाचार को आवश्यक अंग बनाना चाहिए। आज शिक्षा क्षेत्र में शोध सीमित संख्या में हो रहे हैं उन्हें भी बढ़ाने की आवश्यकता है। समाज में यदि शिक्षक को सम्मान मिलेगा तो प्रतिभावान युवक शिक्षक बनेंगे। इस अवसर पर विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान के अध्यक्ष श्री कैलाश चंद्र शर्मा ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को क्रियान्वित किये जाने को लेकर संस्थान की ओर से दस सदस्यीय स्थायी समिति बनाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के साथ 28 अन्य क्षेत्रीय संगोष्ठियों में प्राप्त सुझावों को सभी नियामक संस्थाओं को भेजा जाएगा। कार्यक्रम का संचालन विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान के मध्यप्रदेश संयोजक डॉ. शशिरंजन अकेला ने किया। अतिथियों का स्वागत डॉ. एस.पी.एस.राजपूत, श्री अभिषेक त्रिपाठी, डॉ. भारती सातनकर एवं श्री जी. मधुसूदन ने किया। आभार प्रदर्शन विद्या भारती के मध्य भारत के प्रांत प्रमुख डॉ. रामकुमार भावसार ने किया।

अनूठे अंदाज से पढ़ाते हैं काका

मध्यप्रदेश के हरदा जिले के रहने वाले राजेश काका बच्चों को अपने अनूठे अंदाज में पढ़ने–लिखाने को लेकर जाने–जाते हैं। काका का कहना है कि गणित सहित विभिन्न विषयों को बच्चों के बीच सैद्धांतिक के स्थान पर यदि प्रायोगिक तरीके से पढ़ाया जाए, तो बच्चे और जल्दी सीख सकते हैं । वे कहते हैं कि इसी सोच के साथ उन्होंने खिलौने के माध्यम से बच्चों को कार्यशालाओं के माध्यम से पढ़ाना–लिखाना शुरु किया। काका ने बताया कि उनके इस प्रयोग से छोटे बच्चे बहुत उत्साह के साथ खेल–खेल में पढ़ना लिखना सीख रहे हैं।

सृजन संस्था के डायरेक्टर राजेश काका कहते हैं कि दशकों तक सैद्धांतिक शिक्षा चलती रही, लेकिन बच्चों को यदि शिक्षित करना है तो उन्हें प्रायोगिक ज्ञान देना जरुरी है । यही सोच और उद्देश्य को आगे रखते हुए हम खेल–खेल में छोटे बच्चों को वो सब सिखाते हैं जो उन्हें सैद्धांतिक तरीके से सिखाने की जबरन कोशिश की जा रही है। जबर्दस्ती सिखाने से उसका ज्ञान बढ़ता नहीं है, बल्कि वह रट लेता है। उनका कहना है कि गणित को बच्चे कठिन विषय मानते हैं, लेकिन इसे सरल बनाया जा सकता है, बस इसके लिए हमें कुछ अलग तरीके से सोचना होगा। गणित को यदि प्रायोगिक तरीके से खेल–खेल में सिखाया जाए तो यह भी बहुत सरल विषय बन सकता है। उन्होंने कहा कि उनके इन प्रयोगों से बच्चे गणित और अन्य विषय आसानी से पढ़ना–लिखना सीख गए।

एकलव्य संस्था से भी जुड़े रहे राजेश काका का कहना है कि बच्चों को खिलौने बहुत प्रिय होते हैं और हमने इसी को साधन बनाते हुए इसका रचनात्मक उपयोग किया है। काका का ये भी कहना है कि आजकल बच्चों में चिड़चिड़ापन हो रहा है और धैर्य खत्म होता जा रहा है। वे समस्याओं से घिरते हुए डिप्रेशन का शिकार भी होते जा रहे हैं, लेकिन यदि प्रायोगिक तरीके से उन्हें रचनात्मक ज्ञान दिया जाए तो समस्या का समाधान करना भी वे सीख सकते हैं। हम बच्चों को खेल–खेल में रचनात्मक तरीके से समस्याओं का समाधान करना भी सिखा रहे हैं। इससे किसी भी तरह की समस्याएं आने पर समाधान करने के लिए वे अपने मतिष्क का सहीं उपयोग कर पाएंगे। काका का कहना है कि बच्चों को ज्ञानार्जन स्वाभाविक तरीके से करना चाहिए और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वह इससे दूर होता जा रहा है। मेरा ये मानना है कि शिक्षा रुचिकर होना चाहिए न कि अरुचिकर। ज्ञान प्राप्त करने में रुचि होना बहुत ही आवश्यक है यदि रुचि है तो फिर पढ़ने–पढ़ाने का तरीका बच्चों के स्तर का होना चाहिए और ये तरीका यदि प्रायोगिक है तो फिर बच्चे आसानी से सब कुछ सीख सकते हैं।

बच्चों को खेल–खेल में समझा देते हैं गणित की बारीकियां

बच्चों को सतत कुछ नया सिखाने के लिए हमेशा नए–नए प्रयोग करने वाले होशंगाबाद के बहुमुखी प्रतिभा के धनी राहुल मांझी ने गणित विषय में चार प्रकार के मॉडल तैयार किए हैं। वे कहते हैं– बच्चों में गणित विषय को लेकर हमेशा डर बना रहता है और वे इसे एक कठिन विषय मानते हैं इस समस्या को सुलझाने के लिए उन्होंने भारतीय प्राचीन गणितज्ञ के गणितीय शोध, गणित के सौंदर्य, गणित पजल, कक्षा कक्ष में संचालित गणित के सूत्र उत्पत्ति के मॉडल तैयार किए हैं। इस प्रयोगशाला से अन्य विद्यालय के शिक्षक भी जुड़ सकते हैं। इस विद्या में विद्यार्थियों को गणित के गुणधर्म एवं नए–नए नियम सीखने को मिलेंगे। उन्होंने कहा कि समाज के सभी समुदाय के लोग अपने बच्चे को गणित प्रयोगशाला में लेकर आते हैं।

मैने गणित विषय जब पहली बार पढ़ाया मुझे कुछ दिन बाद ऐसा लगा कि मैं बच्चों को जो देना चाहता हूं उसमें कहीं न कहीं असफल हो रहा हूं, मुझे एहसास हुआ कि गणित केवल बोर्ड और कॉपी से नहीं समझाया जा सकता। तब से सप्ताह में एक दिन प्रायोगिक कक्षा लगाने लगा। इस कक्षा में अगले सप्ताह गणित में संबंधित पाठ में कौनसा सूत्र आ रहा है उसकी उत्पत्ति को प्रायोगिक तौर पर सीखना एवं पिछले सप्ताह में जो सीखा है, उसे करके सीखना जैसे किसी भी शिक्षक के मोटरसाइकिल की पहियों की परिधि ज्ञात करना। कक्षा 8वीं के बोर्ड का क्षेत्रफल ज्ञात करना जैसे छोटे–छोटे प्रयोग करना अर्थात करके सीखना। ऐसा करने से 50 प्रतिशत सफलता हासिल हुई और बच्चे भी गणित में रुचि लेने लगे। इससे डर कम हुआ। गृह कार्य के लिए जैसे लाभ हानि के सवाल है उसे व्यवहारिक जीवन मे कैसे उतारें, उसके लिए गाँव के दुकानदार से मिलना और 5 ऐसे सामग्री तैयार करना, जिसमें लाभ प्राप्त हो सके। इन प्रयोगों से बच्चों में गणित के प्रति रुझान बढ़ा है इस तरह से सभी विषयों को पढ़ाया जा सकता है।

राहुल ने कहा कि नई शिक्षा नीति को समझकर यदि शिक्षक बच्चों को पढ़ाएंगे तो बच्चों को कोचिंग जाना पड़ेगा और बच्चों का उबाऊपन खत्म होगा, बस शिक्षक क्रियाधारित शिक्षण करायें, यही उम्मीद कर सकते हैं। मस्ती में क्रिया आधारित शिक्षा के साथ नया–नया अनुभव सीखेंगे।

स्कूल में बच्चों पर बढ़ते बस्ते के बोझ पर राहुल कहते हैं कि बस्ते का बोझ कम होना ही चाहिए। प्राइवेट स्कूलों में बच्चों के वजन से ज्यादा बच्चों के बस्ते का बोझ होता है। गृहकार्य बहुत दिया जाता है जिसके चलते बच्चे स्वाध्याय नहीं कर पाते। जितना क्रियाधारित शिक्षण होगा, बच्चे को हमेशा याद रहेगा, खेल–खेल में शिक्षण होगा तो बच्चे बोर नहीं होंगे, खोज–खोज में शिक्षण होगा तो बच्चे नई–नई चीज सीखेंगे, जिसमें किताबों की कोई जरूरत नहीं होगी और वे बस्ते के बोझ से भी बचेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर राहुल मांझी ने कहा कि इसको अध्ययन करने के बाद जो कुछ मुझे व्यक्तिगत तौर पर समझ आया की काश हमारे समय यह शिक्षा नीति क्यों लागू नहीं हुई। कारण अब शिक्षा जानने के लिए नहीं पहचानने के लिए होगा जैसे अमेरिका के प्रधानमंत्री को हम जानते हैं पहचानते नहीं। इसीलिए नवीन शिक्षा नीति लेकर आये हैं। करके सीखो, खेल–खेल में सीखो। मनोरंजन के साथ पढ़ाई एक अलग ही आंनद है। यह तब सार्थक होगा जब शिक्षक स्वयं बच्चे बन जाए ओर उनके साथ मिलकर नई–नई जानकारी खोजें, करें, खेलें और सिखायें। बच्चों को ज्यादा गृह कार्य पर राहुल कहते हैं कि बच्चे को गृह कार्य बहुत दिया जाता है, जिसके कारण भी बच्चो में विकास की दर कम हो रही है, जिसका कारण है गृह कार्य जो कि सभी विषयों का मिलता है। छोटे बच्चे की पढ़ाई का समय 1 से 2 घंटे ही होता है, इतने समय में यदि बच्चा केवल गृहकार्य करता है तो पढ़ेगा कब, गृहकार्य पढ़ाई तो होती नहीं है केवल कॉपी भरना होता है। पढ़ाई तो वो है जिसमें बच्चे को आनंद आये बच्चे तन्मय हो जायें और कुछ नया सीखें। इसीलिए गृहकार्य कितना देना है, कब देना है, इसमें विचार होना चाहिए। राहुल ने कहा कि विद्याभारती के पाठ्यक्रम कौशल विकास के छोटे–छोटे कोर्स विद्यालय स्तर पर बनना चाहिए। परन्तु ध्यान देने वाली बात यह है कि कोर्स ऐसा चयन करना होगा, जिसका आसपास के गांव में संभावना ज्यादा हो जैसे, कम्प्यूटर शिक्षा वर्तमान में इसका ज्यादा आवश्कता है, जैविक कृषि का प्रशिक्षण एवं अन्य जिसका रॉ मेटेरियल आसपास उपलब्ध हो।

बच्चों को गलती करने का देना चाहिए अवसर

बंगलुरु (कर्नाटक) से पंकज जैन और शिवकुमार की सफल कहानी

किताबी ज्ञान के बजाय प्रायोगिक कार्यों के जरिये विद्यार्थियों को नई कला सिखायी जाये। उन्हें बोलने की छूट दी जाये जिससे वे गलत भी बोल सकें। शिक्षा में यह 'राइट टू रॉन्ग' का फार्मूला कर्नाटक के युवा श्री पंकज जैन और श्री शिवशंकर ने इजाद किया है। वे भारतीय स्कूल शिक्षा पद्धति में वह सुखद और अपेक्षित परिवर्तन के ध्वजवाहक बने हुए हैं जो भारत की आवश्यकता है और भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में जिसकी अवधारणा है। आज की अव्यवहारिक शिक्षा पद्धति के विकल्प की बातें भी वर्षों से की जा रही थी। कुछ विकल्प भी आए लेकिन बदलाव हो न सका। लेकिन इस चुनौतीपूर्ण बदलाव की सफल और अनुकरणीय शुरुआत हुई है। सीट टू सेपलिंग अभियान के माध्यम से कर्नाटक के कई जिलों में यह अभियान प्रारंभ किया गया है। श्री जैन बताते हैं कि हम इस वैकल्पिक शिक्षा पद्धति को अपनाने वाले स्कूलों के शिक्षकों को प्रशिक्षित कर रहे हैं, जिसमें शिक्षक नई व्यवहारिक और प्रयोग मूलक शिक्षा पद्धति से बच्चों को पढ़ा सकें। इस शिक्षा पद्धति में किताबी सैद्धांतिक ज्ञान के स्थान पर प्रयोग के माध्यम से सीखाने –समझाने की व्यवस्था है। डॉ. पंकज का कहना है कि हम 'राइट टू रॉन्ग' यानी बच्चों को गलती करने का अवसर यानी स्वतंत्रता देते हैं, और ये गलती करने का मतलब है कि वे सीखने की प्रक्रिया में खुद को भागीदार बन जाते हैं। जब वे गलती करने के संकोच से बाहर आएंगे तभी सीख सकेंगे और कुछ करने या प्रक्रिया में भागीदार बनने की हिम्मत कर सकेंगे, जब तक बच्चे गिरेंगे नहीं, चलना नहीं सीख पाते, जब तक डूबते नहीं हैं, तैरना नहीं सीख पाते। इसलिए हम 'राइट टू रॉन्ग' का समर्थन करते हैं। इस 'राइट टू रॉन्ग' की वजह से ही बच्चे खुलकर कुछ अभिव्यक्त करने में सहज होते हैं। बच्चों को अंक नहीं लर्निंग चाहिए, टीचर नहीं ट्रेनर चाहिए अब जब शिक्षण पद्धति बदल रहे हैं तो परीक्षा अर्थात मूल्यांकन पद्धति भी बदलनी आवश्यक है। इस शिक्षण पद्धति में मूल्यांकन पद्धति भी रचनात्मक ही है। इस मुहिम में हम देख रहे हैं कि स्कूल संचालन और अभिभावक सभी की सोच में परिवर्तन आ रहा है। स्कूल शिक्षा पद्धति के इस मॉडल को पहले नवोन्मेष के आग्रह के रूप में प्राइवेट स्कूल संचालकों के समक्ष रखा गया था। लेकिन किताबी सूचना पद्धति के दुष्प्रभावों के प्रति संवेदनशील स्कूल प्रबंधकों ने इसे स्वीकार करने की हिम्मत दिखाई, जो इस सकारात्मक बदलाव के लिए एक सक्सेस स्टोरी के रूप में सामने आती है। शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में यह पहल सीड टू सेप्लिंग नाम के एक स्वैच्छिक संगठन के बैनर तले की जा रही है।

शिक्षा का कायाकल्प करना शिक्षकों के हाथ में: डॉ. शास्त्री

21वीं सदी में शिक्षक शिक्षा का कायाकल्प विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन 'मल्टीडिसिप्लेनरी नेचर ऑफ टीचर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन' विषय पर तकनीकी सत्र आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता जागरण लेक सिटी यूनिवर्सिटी, भोपाल के कुलपति, प्रो. संदीप शास्त्री ने की। सत्र में प्रमुख वक्ता के रूप में त्रिपुरा केन्द्रीय विश्व. विद्यालय के कुलपति प्रो. गंगाप्रसाद, मुक्त विश्वविद्यालय 'एनआइओएस' नोएडा की चेयरपर्सन प्रो.सरोज शर्मा, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू के डॉ. जेएन वालिया उपस्थित थे। प्रारंभ में सभी अतिथियों को स्मृति चिह्न एवं पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया गया। तत्पश्चात प्रो. गंगाप्रसाद ने सत्र की शुरुआत करते हुए कहा कि मणिपुर, असम, त्रिपुरा सहित कुछ राज्यों में भाषागत परेशानियाँ हैं तथा बीएड के पाठ्यक्रम को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है। संकाय सदस्यों की नियुक्तियों, पाठ्यक्रमों एवं तत्संबंधी कार्यों में स्पष्ट निर्देशों की उन्होंने आवश्यकता प्रतिपादित की। प्रो. सरोज शर्मा का कहना था कि पूनम बत्रा कमेटी सहित अन्य समितियाँ भी गठित हुई हैं परंतु विज्ञान दर्शन सहित बीएड और एमएड के पाठ्यक्रम की स्थिति अस्पष्ट है। उन्होंने इंडियन एजुकेशन सर्विस 'आईईएस' का गठन न होने पर चिंता भी जताई। प्रो. जेएन बालिया ने कहा कि बीएड पाठ्यक्रम को लेकर अभी स्थितियां स्पष्ट नहीं है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन को लेकर कई चुनौतियां हैं। हमें उनका सामना करना होगा। कुछ कोर्स लांच करना पड़ेंगे जिनका चयनित विश्वविद्यालय में प्रयोगात्मक रूप से अमल करना उपयुक्त होगा। उन्होंने केन्द्रीय विश्वविद्यालयों को आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित करने का सुझाव भी प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि इस मॉडल को लागू करने के लिए विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान के नेतृत्व में एक कोर ग्रुप का गठन किया जाए जो इस संपूर्ण कार्य को संचालित करे। उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति एवं कुलसचिव के प्रशिक्षण की मांग भी की।

तकनीकी सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. संदीप शास्त्री ने कहा कि आदर्श शिक्षक हमेशा बहु विषयक होते हैं। वे कक्षा में रोज नया कुछ करते हैं और बच्चों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देते हैं। उन्होंने एक शिक्षक की आत्मकथा के जरिये अपनी बात को रखा और कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति रूपी 'पक्षी' आपके हाथ में है जिसे मारना है या बचाना है यह आपको तय करना है। इसलिए यह स्पष्ट है कि शिक्षक चाहेगा तो शिक्षा का कायाकल्प हो जाएगा। इसकी शुरुआत हमें अपने आप से करनी होगी और विद्यार्थियों को पढ़ाते समय हम क्या डिलीवर कर रहे हैं यह हमें ही तय करना होगा।

मैकाले की शिक्षा व्यवस्था को बदलना आवश्यक – डॉ. कृष्ण मोहन त्रिपाठी

राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन 'शिक्षक शिक्षा में सुधार' पर केंद्रित सत्र में विद्वतजनों ने मॉडल और प्रयोगों पर अपनी बात रखी। इस सत्र की अध्यक्षता राष्ट्रीय शिक्षा नीति की मसौदा समिति के सदस्य और स्कूल शिक्षा के पूर्व निदेशक डॉ. कृष्ण मोहन त्रिपाठी ने की। वक्ता के रूप में प्रो. प्रकाश अग्रवाल, प्रिंसिपल क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भुवनेश्वर, प्रो. कौशल किशोर, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ बिहार गया तथा तीसरे वक्ता के रूप में श्री अनुराग बैहर, कुलपति अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी ने विचार रखे।

प्रो. प्रकाश अग्रवाल ने शिक्षक शिक्षा विषय में सुधार को शिक्षा क्षेत्र के सुधार का प्रमुख विषय मानते हुए क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भुवनेश्वर में चल रहे 4 वर्षीय बी.एड. इंटीग्रेटेड डिग्री कार्यक्रम के मॉडल को रखा। उन्होंने बताया कि शिक्षकों को स्कूल का एक्सपोजर दिलाने के लिए पाठ्यक्रम को स्कूल से जोड़ा गया है। बच्चों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि जानने समझने दो सप्ताह समुदाय के बीच रहकर काम करने का भी प्रावधान है। जिससे सोशल रिस्पांसिबिलिटी बनती है।

दूसरे वक्ता के रूप में प्रो. कौशल किशोर ने देशभर में चलाए जा रहे इंटीग्रेटेड बी.एड. प्रोग्राम पर शोध पूर्ण प्रस्तुति दी। उन्होंने देश की शिक्षक शिक्षा को पूरी तरह से प्रभावित करने वाले बी.एड. प्रोग्राम की व्यवहारिक एवं सैद्धांतिक कमियों को उजागर किया और साथ ही इन कमियों को कैसे दूर किया जाए इसके समाधान भी प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया कि नई शिक्षा नीति और पूर्व की व्यवस्थाओं के बीच तालमेल बिठाकर हम इस कोर्स को समय के साथ प्रभावी तरीके से डिजाइन कर सकते हैं, इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर विमर्श करने की आवश्यकता है।

तीसरे वक्ता के रूप में श्री अनुराग बेहर जी ने बताया कि आज भी देश के कई सुदूर और चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में चल रहे स्कूल देश की मुख्य धारा से कटे हुए हैं। वहां के शिक्षकों और विद्यार्थियों की कई समस्याएं हैं ऐसे स्कूलों को मुख्यधारा से जोड़ना और जीवंत संबंध बनाए रखना हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती है। उन्होंने बताया कि देश में 90 लाख शिक्षकों वाली व्यवस्था में सुधार करने की चुनौती है। जिसमें कंटेंट और पेडगॉजिकल सुधार आवश्यक हैं।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉक्टर कृष्ण मोहन त्रिपाठी ने कहा कि शिक्षक ऐसा मूर्तिकार है जो जीवंत मानव मूर्ति गढ़ता है। हमें ऐसे शिक्षकों का निर्माण करना है जो अच्छे मानव का निर्माण कर सकें जिससे चेतना और मानवता हो परंतु अहंकार न हो। मैकाले की व्यवस्था को अभी भी प्रतिस्थापित नहीं किया जा सका है और हम अपनी जड़ों से नहीं जुड़ पाए हैं। इसके लिए हमें दो तरह के सुधार की आवश्यकता है। एक कक्षा की विषय सामग्री और दूसरी प्रशासनिक और संगठनात्मक सुधार की आवश्यकता है। जिस प्रकार मेडिकल कॉलेज में अस्पतालों की व्यवस्था अनिवार्य होती है उसी तरह शिक्षा शिक्षकों को तैयार करने वाले संस्थानों में स्कूलों की व्यवस्था भी हो जिससे वास्तव में शिक्षण कार्य को सीख सकें।

बस्ते के बोझ से छुट्टी पाने का तरीका इजाद किया

आजादी के बाद भारत में पहली बार बस्ते के बोझ का स्वरुप ही बदल गया और इसका श्रेय जाता है राजस्थान के एक छोटे से इलाके जालोर के होनहार एवं प्रतिभाशाली शिक्षक श्री संदीप जोशी को। हमेशा कुछ नया करने का जुनून रखने वाले संदीप विद्यालयीन शिक्षा के क्षेत्र में इतिहास में प्रेक्टिकल का नवाचार, प्राथमिक कक्षाओं कक्षा के स्तर पर विज्ञान प्रयोगशाला और बॉटनिकल गार्डन बनाना, बस्ते की छुट्टी, कन्या पूजन की संकल्पना, भारत दर्शन गलियारा, नित्य भारत वंदना की संकल्पना समेत अब तक 30 से अधिक नवाचारों का सफल सृजन एवं क्रियान्वयन कर चुके हैं।

'विद्यार्थी करके सीखे' इसके लिए प्राथमिक कक्षाओं के स्तर पर विज्ञान प्रयोगशाला और बॉटनिकल गार्डन बनाए गए हैं, इतिहास में प्रेक्टिकल का नवाचार किया गया। शिक्षा आनंददायी रहे इसके लिए शनिवार को बस्ते की छुट्टी की बात की। बालकों में उच्च जीवन मूल्य विकसित हो इसके लिए विद्यालय में कन्या पूजन की संकल्पना की गई है। बालक देशभक्त बने इसके लिए भारत दर्शन गलियारा हैं, कक्षा कक्ष उपस्थिति में जय भारत का प्रयोग है या नित्य भारत वंदना की संकल्पना है। ऐसे विभिन्न सब प्रयोग बहुत सोच समझकर व्यापक चिंतन के बाद व्यवहार में लाए गए हैं और इनका बहुत लाभ रहा है। शासन और समाज दोनों की मान्यता इन विभिन्न शैक्षिक नवाचार को मिली। कई नवाचारों को शासन के स्तर पर लागू किया गया और अनेक नवाचारों को शिक्षक मित्रों ने लागू किया है।

बचपन की मस्तियाँ, शैतानियाँ, नादानियाँ, किलकारियाँ, निश्छल हँसी, उन्मुक्तता, जिज्ञासा आदि अनेक बाल–सुलभ क्रियाओं को बस्ते के बोझ ने अपने वजन तले दबा दिया है। एक तरफ तो हम सभी भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने का सपना संजोए हैं वहीं बचपन को बस्ते के बोझ तले कुंठित होने और किशोरों को टी.वी. चैनलों के भरोसे समझदार होने के लिए छोड़ दिया है।

उन्होंने कहा है कि पाठ्यपुस्तकों या सिलेबस को रट कर केवल अंक प्राप्त करना ही शिक्षा नहीं है, बल्कि शिक्षा इससे बहुत व्यापक हैं। उसमें एक भाग कौशल विकास भी हैं। इसीलिए गांधी ने अपने तीन–एच सूत्र में शिक्षा को हाथ, हृदय और मस्तिष्क से जुड़ा हुआ बताया। उन्होंने हाथ के हुनर को और कौशल विकास को बहुत गंभीरता से रेखांकित किया है। जब हम शिक्षा को बालक की आंत. रिक शक्तियों का प्रकटीकरण कहते हैं तब भी स्वाभाविक रूप उसमें कौशल विकास भी सम्मिलित ही है अतः कौशल विकास शिक्षा का एक महत्वपूर्ण भाग है।

अपने काम में जुनून पैदा करना चाहिए। मेरा एक अपना स्वरचित आदर्श वाक्य है 'माय जॉब, माय पैशन'। व्यक्ति चाहे तो अपने काम में ही ईश्वरीय अनुभूति कर सकता है, ईश्वर का साक्षात्कार कर सकता है। अपने कार्य के साथ, एकाकार होना, उसी में डूब जाना, प्रतिपल उसी का चिन्तन, उसी दिशा में बढ़ना यहाँ तक की, उस काम का पर्याय बनना ईश्वर की अनुभूति सा हैं।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में रोजगार के अवसरों को लेकर एक स्पष्ट दृष्टि दिखाई देती हैं। छठी कक्षा से ही विद्यार्थियों को अपने आसपास की परिवेश से जुड़े किसी एक की कौशल की शिक्षा और प्रायोगिक अनुभव लेने की योजना अत्यंत दूरगामी परिणाम लाएगी। केवल प्रश्नोत्तर रटकर अच्छे अंक लाने की होड़ से हटकर हाथ का हुनर सीखने और सिखाने का प्रयास विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का बहुआयामी विकास करने का भी माध्यम बनेगा। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उचित क्रियान्वयन बेरोजगारी की समस्या का भी समाधान करेगा, श्रम की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करेगा। केवल व्हाइट कॉलर जॉब के मोह से युवाओं को मुक्ति मिलेगी। उन्होंने कहा कि हमने उच्च प्राथमिक स्तर तक के विद्यालयों में विज्ञान प्रयोगशाला निर्माण, विज्ञान वाटिका, विद्यार्थी जीवन से ही प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए भारत दर्शन गलियारा, विद्यालयों में बरामदा पुस्तकालय, विद्यार्थियों में स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता उत्पन्न करने के लिए स्वास्थ्य गलियारा, ज्यामितीय वाटिका जैसे विभिन्न नवाचार किए हैं। इन नवाचारों की व्यापकता का फलक बहुत विस्तृत है। शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण ये नवाचार केवल इनके एक विद्यालय तक सीमित नहीं है, बल्कि राजस्थान भर में एवं राजस्थान से बाहर भी बड़ी संख्या में विद्यालयों ने इनके शैक्षिक नवाचारों को अपनाया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लिए विश्वविद्यालयों में आपसी समन्वय आवश्यक – श्री होसबाले

दूसरे दिन पांचवे समानांतर सत्र में शिक्षक शिक्षण से सम्बन्धित विषयों पर कुलपतियों के सम्मेलन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय जी होसबाले ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन शीघ्र होना चाहिए। प्रत्येक विश्वविद्यालय को एक विशेष कार्य करना चाहिये। अलग अलग विश्वविद्यालयों से अलग–अलग अपेक्षा होनी चाहिए। सभी विश्वविद्यालय सभी कार्य करें, यह आवश्यक नहीं है और न ही व्यावहारिक है। एक राज्य में राज्य विश्वविद्यालय, निजी विश्वविद्यालय और केंद्रीय विश्वविद्यालय होते हैं। इनके आपस में समन्वय की आवश्यकता है इसके लिए सभी कुलपतियों को एक निश्चित अवधि में एक साथ बैठना चाहिए। राज्य सरकार को इसके लिए एक औपचारिक व्यवस्था बनानी चाहिए। कुलपति के बदलने पर विश्वविद्यालयों में चल रहे विशेष कार्यक्रम बाधित नहीं होना चाहिए।

इससे पहले इस सत्र में कुलपतियों ने एक साथ बैठकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में शिक्षक शिक्षा के मुद्दों पर मंथन किया। सम्मेलन की अध्यक्षता गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर की कुलपति प्रो. अंजिला गुप्ता ने की।

उन्होंने विद्या भारती को धन्यवाद देते हुए कहा कि शिक्षक शिक्षा के कायाकल्प में निश्चित रूप से इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से सकारात्मक पहल शुरू हो सकेगी। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन राष्ट्र निर्माण के लिए अनिवार्य है। शिक्षक ही विद्यार्थियों को तैयार करता है और विद्यार्थी ही देश के भविष्य होते हैं। विद्यार्थियों में क्षमता निर्माण प्रक्रिया मात्र औपचारिक न हो इसलिए इसे नया स्वरूप दें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से शिक्षा में साम. ुदायिक सामग्री, दर्शन, वैज्ञानिक चेतना, तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स इनक्यूबेशन सेंटर, स्कूल ऑफ एजुकेशन आदि पर कार्य करना समय की आवश्यकता है।

इस संवाद में लगभग दो दर्जन कुलपतियों एवं उच्च शिक्षा संगठन/समितियों के प्रमुखों ने अपने संस्थान में हो रहे उल्लेखनीय कार्यों को प्रस्तुत किया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की पहल अथवा प्रगति से अवगत कराया। कुलपतियों के सम्मेलन में इन मुद्दों पर विमर्श हुआ।

- सभी विश्वविद्यालय अपने पाठ्यक्रम में कम से कम दो क्रेडिट उच्च शिक्षा विभाग और यूजीसी द्वारा प्रवर्तित ऑनलाइन पाठ्यक्रम के लिए रखें।
- एकीकृत और बहुविषयक पाठ्यक्रमों पर तेजी से काम किया जाए।
- विश्वविद्यालय में मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एग्जिट होना चाहिए।
- नेशनल एकेडमिक डिपॉजिटरी सिस्टम को सभी विश्वविद्यालय लागू करें।
- विश्वविद्यालय अपने शोध कार्य में गुणवत्ता और सार्थकता को सुनिश्चित करें।

- कौशल विकास अभिमुखी पाठ्यक्रम चलाए जाएं।
- विषयों के पाठ्यक्रमों में कहीं न कहीं एक अंश के रूप में भारतीयता, भारत गौरव एवं भारत ज्ञान से संबंधित सामग्री रखी जाए। यह पाठ्यक्रम एक या दो क्रेडिट का हो सकता है।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति को शीघ्र लागू करने के लिए यथासंभव प्रयास किए जाएं।
- संबंधित विषय/पाठ्यक्रम के बोर्ड ऑफ स्टडीज में इंडस्ट्री के व्यक्ति को रखा जाना चाहिए।
- पाठ्यक्रमों से संबंधित क्रेडिट ट्रांसफर करने की प्रक्रिया में व्यवहारिक बदलाव किए जाएं।
- आज एकीकृत एवं बहुविषयक पाठ्यक्रमों की आवश्यकता है।
- विश्वविद्यालय क्षेत्रीय संस्कृति, भाषा एवं परंपराओं पर आधारित रोजगार एवं ज्ञानमूलक पाठ्यक्रम शुरू करें।

अमानक बी.एड. संस्थान शिक्षा व्यवस्था के लिए घातक – श्री सिंह

संगोष्ठी के दूसरे दिन पांचवे सत्र में 'उच्च शिक्षा संस्थानों की भूमिका, शासन के मुद्दे एवं शिक्षक शिक्षा के मानक' विषय पर महत्वपूर्ण चर्चा हुई। सत्र की अध्यक्षता डॉ. ऋषि गोयल डायरेक्टर एससीइआरटी हरियाणा ने की, वक्ता के रूप में श्री अजीत सिंह राणा ने शिक्षक शिक्षा की चुनौतियों पर चर्चा की।

कर्णावती से आए प्रो. राणा ने कहा कि शिक्षकों की शिक्षा के लिए सबसे अधिक उत्तरदायी बी.एड. पाठ्यक्रम है। आज प्रतिवर्ष 18 लाख शिक्षक बीएड शिक्षा प्राप्त कर निकलते हैं, जबकि देश में प्रतिवर्ष केवल तीन लाख शिक्षकों की ही आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि सरकार को उच्च शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त विसंगतियों को दूर करना चाहिए।

सत्र के अध्यक्ष डॉ. ऋषि गोयल ने कहा कि जिस तरह विद्यार्थी मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश लेने के लिए सरकारी या अनुदान प्राप्त संस्थाओं को वरीयता देते हैं उसी प्रकार बी.एड. संस्थाओं को नहीं देते हैं। वे अमानक संस्थाओं में प्रवेश लेते हैं, ताकि उन्हें वहां उपस्थित नहीं होना पड़े। उन्हें अच्छा शिक्षक बनने में ही विश्वास नहीं है। श्री गोयल ने कहा कि अभी देश में कुल बजट का 4.5 प्रतिशत ही शिक्षा पर व्यय किया जा रहा है। यह छह प्रतिशत होना चाहिए। सवाल यह है कि इस 4.5 प्रतिशत में से शिक्षक शिक्षा पर कितना हिस्सा खर्च होगा। देश में सरकारी बी.एड कॉलेजों की संख्या दशकों से नहीं बढ़ी है। पब्लिक फायनेंस की कमी से निजी संस्थान फल–फूल रहे हैं और इस कारण शिक्षा व्यवस्था चौपट हो रही है, जिसे गंभीरतापूर्वक रोकना चाहिए।

भारतीय ज्ञान को पढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम का इंतजार न करें

'शिक्षक शिक्षण हेतु पाठ्यक्रम संरचना : शिक्षक शिक्षण पाठ्यक्रम में भारतीयता' विषय पर आयोजित समानांतर सत्र में एन.सी.ई.आर.टी. के सौंदर्य शास्त्र एवं कला विभाग की प्रो. ज्योत्सना तिवारी ने कहा कि भारत की ज्ञान परम्परा राष्ट्रीय शिक्षा नीति की आत्मा है। भारत में ज्ञान परम्परा अनवरत चलती रही है। इसी कारण हमारे यहां सिंधु घाटी सभ्यता में सम्पन्न शहर थे। भाषा, इतिहास एव संस्कृति के माध्यम से ही देशज ज्ञान प्राप्त होता है। आज भारतीय परम्परा से संबंधित बहुत सारी चीजों से हमारे स्कूल के विद्यार्थी वंचित रहते हैं। उन्होंने शिक्षकों से आह्वान किया कि वे भारतीय ज्ञान को बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम का इंतजार न करें। इसे अपने स्तर पर ही प्रारंभ कर दें। एन.सी.ई.आर.टी. की प्रो. शारदा सिन्हा ने कहा कि गुरु–शिष्य परम्परा को आज भी समाज में उच्च दृष्टि से देखा जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने के साथ फ्यूचरस्टिक करिकुलम पर भी सोचा जाना चाहिए।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद की प्रो. एम. वनजा ने कहा कि टीचर को गुरु करने के लिए गुरु जैसा बनना पड़ेगा। तैरना सिखाने के लिए हमेशा खुद तैरना सीखना पड़ता है।

प्रकाशन– विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा **'21वीं सदी में शिक्षक शिक्षा का कायाकल्प'** विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में आंतरिक वितरण हेतु प्रकाशित।
सम्पादक मण्डल – डॉ. शशि रंजन अकेला, डॉ. रामदीन त्यागी, दीपक चौकसे, डॉ. अरुण खोबरे, तरुण सेन। **तकनीकी टीम –** मनोज पटेल, राहुल खड़िया, बापू वाघ, परेश उपाध्याय, प्रियंका सोनकर, रेवती रमण मिश्र, राकेश मिश्र, ललित विश्वकर्मा, डिंपल तिवारी, शिवांगिनी शर्मा। **मुद्रण –** कविता ऑफसेट प्रिंटर, भोपाल।